पंजीकरण सं. MEE/07849/2021-2022

राजा नैन सिंह स्मारक समिति

पूर्व रियासत किला परीक्षितगढ़ एवं बहसूमा, मेरठ

देशपाल सिंह
अध्यक्ष
Ph. 9358400592

प्रताप सिंह नागर
सचिव
Ph. 7467856455

राजा नैन सिंह (स्मारिका)

(राजा जैतसिंह, राजा नैन सिंह, राजा नत्था सिंह और कुंवर कदम सिंह तथा रानी लाडकौर का जीवन–चरित्र)

लेखक : कुंवर प्रताप सिंह नागर

सारांश

कुँवर कदम सिंह

(10 मई 1857 की क्रान्ति के महानायक)

1857 का विद्रोह सिपाहियों के असंतोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र, उसकी नीतियों, उनके कारण कम्पनी के शासन के प्रति जनता के संचित असंतोष का और विदेशी शासन के प्रति उनकी घृणा का परिणाम था। एक शताब्दी से अधिक समय तक अंग्रेज इस देश पर धीरे–धीरे अपना अधिकार बढ़ाते जा रहे थे और इस काल में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में विदेशी शासन के प्रति जन असंतोष तथा घृणा में वृद्धि होती रही। यही वह असंतोष था। जिसका अन्तिम रूप एक जन विद्रोह के रूप में 1857 में उभरा। 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन की नीतियों और साम्राज्यवादी शोषण के प्रति–जन असंतोष का उभार था।

10 मई 1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र एवं प्रमुख विद्रोही नेता

	केन्द्र	विद्रोही नेता	दिनांक	दमन कर्त्ता–ब्रिटिश शासन
1.	मेरठ	राव कदम सिंह	10 मई 1857	मेजर नरल हैविट
2.	दिल्ली	बहादुरशाह II	11 मई 1857	निकलसन हड़सन
3.	लखनऊ	बेगम हजरत बिरजिस कादिर	4 जून 1857	कालिम कैदबल
4.	झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857	कालिम कैदबल
5.	ग्वालियर	तात्या टॉपे	4 जून 1857	जनरल हूरोंग
6.	कानपुर	नाना साहब	5 जून 1857	जनरल हूरोंग
7.	जगदीशपुर	कुँवर सिंह/अमर सिंह	12 जून 1857	विलियम टैकर
8.	इलाहाबाद	लियाकत अली	6 जून 1857	कर्नल नीक
9.	बरेली	खान बहादुर खाँ अखतर खाँ	जून 1857	सिवेन्ट आयर

कुँवर कदम सिंह का जीवन परिचय

कुँवर कदम सिंह का जन्म 25–10–1831 में बहसूमा रियासत के राजमहलों में हुआ था। राजा नैन सिंह के बड़े भाई कुँवर जहाँगीर सिंह का विवाह खूबड़ गौत्रा में मनीराम की पुत्री रामकौर से हुआ था जिससे कुँवर देवी सिंह पैदा हुए। कुँवर देवी सिंह का विवाह नसीरपुर के रतन सिंह की बेटी प्राणकौर से हुआ जिससे पुत्र हुआ कुँवर कदम सिंह। इन्हीं कुँवर कदम सिंह को रानी लाड़कौर ने परीक्षितगढ़ का केयरटेकर बनाया था। कुँवर कदम सिंह अविवाहित थे।

1857 की क्रांति में कुँवर कदम सिंह का योगदान

कुँवर कदम सिंह ने मेरठ क्रांति का नेतृत्व किया। ब्रिटिश शासन में भारत के वायसराय लार्ड कार्नवालिस के पश्चात 1846 ई० में लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल बनकर भारत आये थे।

वर्ष 1846 ई० में लार्ड डलहौजी गवर्नर जनरल थे। वे गुर्जर जाति के लिए सबसे खतरनाक सिद्ध हुए। 31 अक्टूबर 1846 ई० को उन्होंने एक कानून बनाया जिसे (लौजीलेक्सी एक्ट) कहा जाता है। इस कानून के तहत किस हिन्दू को ईसाई बन जाने पर उसे पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार के साथ तिगुनी सम्पत्ति दी जाती थी। दूसरे कोई भी ईसाई किसी भी हिन्दू सम्पत्ति में मनमाने ढंग से अधिकार पा सकता था। भारी जन विरोध के बावजूद 29 अप्रैल, 1850 ई० को इस कानून को लागू कर दिया गया।

''इस एक्ट के अनुसार डलहौजी ने किला परीक्षितगढ़ का कुछ भाग तो लण्डौरा रियासत के अधीन करके लण्डौरा राजा हरिवंश सिंह, कुँवर रगवीर सिंह, सौतेली माता कमला आदि को अपने पक्ष में कर लिया। बाकी भाग पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया।''

मेरठ के तत्कालीन कलैक्टर आर.एच. डनलप द्वारा मेजर नरल हैविट को 28 जून 1857 ई० को लिखे पत्र से पता चलता है कि राव कदम सिंह मेरठ के क्रांतिकारियों का सरताज थे एवं पूर्वी परगने क्षेत्र के क्रांतिकारियों के नेता थे। उनके साथ 10 हजार क्रांतिकरियों ने बलिदान दिया जोकि प्रमुख रूप से मवाना, हस्तिनापुर, रियासत परीक्षितगढ़ बहसूमा क्षेत्रा के थे। ये क्रांतिकारियों का कफन प्रतीक तौर पर सिर पर सफेद पगड़ी बाँधकर चलते थे। क्रांतिकारियों ने पूरे जिले में खुलकर विद्रोह कर दिया था और परीक्षितगढ़ के राव कदम सिंह को पूर्वी परगने का राजा घोषित कर दिया था। राव कदम सिंह व दलेल सिंह और पृथ्वीसिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने परीक्षितगढ़ की पुलिस पर हमला बोल दिया और पुलिस को मेरठ तक खदेड़ दिया। ''उसके बाद संभावित युद्ध की तैयारी में रियासत परीक्षितगढ़ किले पर तीनों तोपें चढ़ा दी थीं।'' ये तौपें जब से किले में दबी पड़ी थीं।

जब सन् 1803 में अंग्रेजों ने दोआब में अपनी सत्ता जमाई थी। उसके बाद हिम्मतपुर और बुकलाना के क्रांतिकारियों ने राव कदमसिंह के नेतृत्व में गठित क्रांतिकारी सरकार की स्थापना के लिए अंग्रेज परस्त गाँवों पर हमला बोलकर बहुत से गद्दारों को मौत के घाट उतार दिया। क्रांतिकारियों ने इन गाँवों सें लगान को भी वसूला था।

राव कदमसिंह बहसूमा परीक्षितगढ़ रियासत के अंतिम राजा नैन सिंह के भाई का पौत्र था। राजा नैनसिंह के समय रियासत में 349 गाँव थे और इसका क्षेत्रफल लगभ 800 वर्ग मील था। वर्ष 1818 में नैनसिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने रियासत पर कब्जा कर लिया था। इस क्षेत्र के लोग पुनः अपना राज चाहते थे। इसीलिए क्रांतिकारियों ने कदमसिंह को अपना राजा घोषित कर दिया।

10 मई 1857 ई० को मेरठ में हुए सैनिक विद्रोह की खबर फैलते ही मेरठ के पूर्वी क्षेत्र में क्रांतिकारियों ने राव कदमसिंह के निर्देश पर सभी सड़कें रोक दीं और अंग्रेजों के यातायात और संचार को ठप कर दिया। मार्ग से निकलने वाले सभी यूरोपियनों को लूट लिया। मवाना, हस्तिनापुर, बहसूमा के क्रांतिकारियों ने राव कदमसिंह के भाई दलेल सिंह 'पिथीसिंह' और देवीसिंह आदि के नेतृत्व में बिजनौर के विद्राहियों के साथ साझा मोर्चा गठित किया और बिजनौर के मण्डावर, दारानगर और घनौत क्षेत्र में धावे मारकर वहाँ अंग्रेजी राज को हिला दिया। इनकी अगली योजना मण्डावर के क्रांतिकारियों के साथ बिजनौर पर हमला करने की थी। मेरठ और बिजनौर दोनों ओर के घाटों, विशेषकर दारानगर और रावली घाट पर राव कदमसिंह का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि कदमसिंह विद्रोही हो चुकी बरेली ब्रिगेड के नेता खान बख्श के सम्पर्क में था। क्योंकि उसके समर्थकों ने ही बरेली ब्रिगेड को गंगा

पार कराने के लिए नावें उपलब्ध कराई थी। इससे पहले अंग्रेजों ने बरेली के विद्रोहियों को दिल्ली जराने से रोकने के लिए गढ़मुक्तेश्वर के नावों के पुल को तोड़ दिया था।

26 जून, 1857 ई० को बरेली ब्रिगेड का बिना अंग्रेजी विरोध के गंगा पार दिल्ली चले जाना खुले विद्रोह का संकेत था। जहाँ बुलन्दशहर में विद्रोहियों का नेता बुलीदाद खान वहाँ का स्वामी बन बैठा, वहीं मेरठ में क्रांतिकारियों ने कदमसिंह को राजा घोषित किया और खुलकर विद्रोह कर दिया।

28 जून 1857 को मेजर नरल हैविट को लिखे पत्र में तत्कालीन कलैक्टर जनरल ने मेरठ के हालातों पर चर्चा करते हुए लिखा कि यदि हमने शत्रुओं को सजा देने और अपने दोस्तों की मदद के लिए जोरदार कदम नहीं उठाए तो जनता हमारा पूरी तरह साथ छोड़ देगी और आज का सैनिक और जनता का विद्रोह कल व्यापक क्रांति में परिवर्तित हो जाएगा।

राव कदम सिंह से निपटने के लिए अंग्रेजों द्वारा खाकी रिसाले का गठन

राव कदमसिंह के क्रांतिकारियों एवं मेरठ के क्रांतिकारी हालातों पर काबू पाने के लिए अंग्रेजों ने मेजर विलियम्स के नेतृत्व में खाकी रिसाले का गठन किया। इस घटना के बाद राव कदमसिंह ने परीक्षितगढ़ छोड़ दिया और उन्होंने बहसूमा में मोर्चा लगाया। जहाँ गंगा खादर से उन्होंने अंग्रेजों पर हमला बोल दिया और तहसील को घेर लिया। खाकी रिसाले के वहाँ पहुँचने के कारण भयंकर युद्ध हुआ। क्रांतिकारियों को पीछे हटना पड़ा।

20 सितम्बर 1857 ई० को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। हालातों को देखते हुए राव कदम सिंह एवं दलेल, पिर्थोसिंह अपने हजारों समर्थकों के साथ गंगा के पार बिजनौर चले गये। जहाँ नवाब महमूद खान के नेतृत्व में अभी भी क्रांतिकारी सरकार चल रही थी। थाना भवन के काजी इनायत अली और दिल्ली से बहादुरशाह जफर के तीन मुगल शहजादे भी भागकर बिजनौर पहुँच गये।

राव कदम सिंह के साथ 10 हजार क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई

राव कदमसिंह आदि के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बिजनौर से नदी पार कई अभियान किये। उन्होंने रंजीतपुर में हमला बोलकर अंग्रेजों के घोड़े छीन लिए। 5 जनवरी 1858 ई० को नदी (गंगा) पार कर मीरापुर एवं मुज्जफरनगर में पुलिस थाने को आग लगा दी। इसके बाद राव कदम सिंह ने हरिद्वार क्षेत्र में मायापुर गंगा नहर चौकी पर हमला बोल दिया और कनखल में अंग्रेजों के बँगले जला दिये। राव कदम सिंह के इन अभियानों से उत्साहित होकर नवाब महमूद खान ने राव कदम सिंह एवं दलेल सिंह, पिर्थोसिंह आदि के साथ मेरठ पर पुनः आक्रमण करने की योजना बनाई। परन्तु उससे पहले ही 28 अप्रैल 1858 ई० को बिजनौर में क्रांतिकारियों की हार हो गई और नवाब को रामपुर के पास से गिरफ्तार कर लिया। उसके पश्चात राव कदम सिंह एवं दलेल सिंह, प्रिथीसिंह, देवीसिंह एवं बहसूमा के अन्य क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर बरेली ले गये और कुछ क्रांतिकारियों को मेरठ ले गये। राव कदम सिंह के साथ ही 10 हजार क्रांतिकारियों को गिरफ्तार को एक–एक करके फाँसी दे दी थी।

मेरठ के गजेटियर के अनुसार 28 जुलाई 1858 ई० बहसूमा राज–परिवार को सामूहिक फांसी लगाई गई थी। राज परिवार के 55 सदस्यों को फांसी लगाई थी। परन्तु गजेटियर में दलेल सिंह, प्रिर्थोसिंह, देवी सिंह, भवानी सिंह, दुर्जन सिंह आदि का नाम उल्लेख है। बाकी सभी राज–परिवार के नाम गोपनीय रखें। साथ 10 हजार क्रान्तिकारियों को फाँसी दी गई थी। मेरठ जहाँ जो स्थान विक्टोरिया पार्क से जाना जाता है। वहीं पर ब्रिटिश शासन काल में जेल थी। इसी जेल में राज परिवार को फाँसी दी गई थी। समस्त सेना को बारी–बारी करके फाँसी दे दी थी। मेरठ की दर्दनाक स्थिति उस समय की जो कि विश्व की महान क्रांन्ति के रूप में परिवर्तन हुई थी। मेरठ धरती की महान क्रान्ति विश्व की सबसे बड़ी क्रान्ति थी।

''महारानी विक्टोरिया ने इस जेल को यहाँ अलग करके इस स्थान पर महान शासक बहसूमा एवं किला परीक्षितगढ़ राज परिवार सदस्यों सामूहिक फांसी दी थी। इस स्थान का नाम विक्टोरिया पार्क कर दिया था।''

इस महान क्रान्ति को महाभारत काल का कुरुक्षेत्र कहा जाता है। इस महान क्रान्ति सम्राट जनमेजय नागवंश की महारानी से शादी हुई थी। तभी उनके कोढ़ आ गया था। उनसे जो पुत्र पैदा हुआ नागवंश कहलाया। सम्राट जनमेजय कुरूवंश का राज्य समाप्त होकर नागवंश के राजाओं का राज्य आगे बढ़ा था। ''ऐसा शास्त्रों एवम् पुराणों में उल्लेख है इसी नागवंश के राजाओं कलयुग के मध्यान्तर लगभग 17वीं शताब्दी के शुरु में नवजात शिशु जैतसिंह का जन्म हुआ था। इसी बालक को भगवान शिव ने दर्शन दिये थे। मुगल बादशाहों को पराजित करके किला परीक्षितगढ़ राज्य की स्थापना की थी। **राव कदम सिंह के बारे में गजेटियर मेरठ के अनुसार 17 सितम्बर 1858 ई० को फांसी का उल्लेख है।** चूंकि इनको राजा घोषित कर रखा था। इनकी अस्थियाँ को राजपरिवार को नहीं सौंपी थी। इसलिए इनको अलग से फांसी दी गई थी। चूंकि राज परिवार पूरी तरह नष्ट कर दिया था। राज परिवार को अन्देशा है। लार्ड डलहौजी उनकी अस्थियों को विदेश में अर्थात इंग्लैण्ड ले गया था। आजतक भी किसी राजनेता ने इनकी अस्थिकलश नहीं मंगवाई है। मेरा संघर्ष जब तक जारी रहेगा जब तक उनकी अस्थिकलश वापस नहीं आ जाती है।

हमें गर्व है कि हमारे पूर्वज शासक होने के साथ–साथ विश्व की महान क्रांति के महानायक थे। इस क्रांति में तीन लाख पाँच सौ सत्तर के लगभग लोगों को फाँसी लगी जिसमें रावे कदम सिंह के 10 हजार क्रांतिकारियों, बहसूमा रियासत के लगभग 60 या 62 व्यक्तियों को फाँसी लगी। पूरे देश में लगभग 60 या 62 हजार के लगभग गुर्जर (समाज) के व्यक्तियों को फाँसी लगी थी। लगभग सवा लाख नवाबों एवं मुस्लिमों को फाँसी लगी थी। अन्य पिछड़े एवं दलितों को फाँसी लगी थी। जिन जातियों ने अंग्रेजों का साथ दिया है। उन्हें सर, राय, चौधरी संज्ञा दी गई, जो अंग्रेजों के वफादार थे।

बहसूमा रियासत का संक्षिप्त इतिहास

सम्वत् 1145 में गुर्जर प्रतिहार वंश के राजा तुँग पुत्र राजा अनंगपाल के पुत्र हुये 1. राजा नगहपाल नगर 2. राजा विशम्बर सिहं नागर जो नीम का तिगाँव (हरियाणा) से चलकर बहसूमा आ गये। इसी स्थान को पुनः आबाद किया। इस स्थान का नाम बहसूमा किया गया। यह स्थान महाभारत काल से विरान पड़ा था।

कुँवर रामकुँवर के बड़े पुत्र बल्ले सिंह का विवाह जनपद–बुलन्दशहर के बम्बावड़ ग्राम के बोकन गौत्र के विजय सिंह की पुत्री तेजकौर से सम्पन्न हुआ। बल्ले सिंह मुगल शासन में पहले कोतवाल बनाये गये। बाद में उन्हें सेनापति बनाया गया। औरंगजेब के पुत्र बहादुरशाह (प्रथम) ने सेनापति बल्ले सिंह का विरोध किया था कि हम बल्ले सिंह को सेनापति नहीं चाहते हैं। उन्हें धोखे से मार डाला। तब मुगल सल्तनत ने (राजपूत) जाति के प्रताप सिंह की सेनापति बनाया गया।

राजा जैतसिंह नागर

कुँवर जैतसिंह मुगल सेनापति बल्ले सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। जैतसिंह का जन्म लगभग वर्ष 1711 ई. में हुआ था। बल्लेसिंह की मृत्यु के समय कुँवर जैतसिंह 2 माह के थे। नीम का तिगाँव और बम्बावड़ दिल्ली सल्तनत के निकट होने के कारण कुँवर बल्लेसिंह की पत्नी तेजकौर ने अपने छोटे पुत्र कुँवर जैतसिंह को लेकर बहसूमा की ओर प्रस्थान किया। चूंकि बहसूमा में पहले से परिवार रहता था और दिल्ली सल्तनम से दूर था। ''जब माता तेजकौर नीम के तिगाँव से बहसूमा को जा रही थी, तो रास्ते में (सैफपुर) गाँव पड़ा था। यहाँ पर माता तेजकौर को अंधेरा हो जाता है। बहसूमा कुछ मील दूर था। रात्रि विश्राम (मीरकासिम सैय्यद) के यहाँ माता रूकी थी। सैय्यद मीरकासिम ने माता का आदर भाव किया। तभी उनके परिवार के साथ जंगल में काम करने चली गयी थी। नवजात शिशु कुँवर जैतसिंह को भी अपने साथ ले गई। दोपहर के समय वृक्ष के नीचे लेट रहे। कुँवर जैतसिंह पर (धूप) आ गयी थी। अचानक भगवान शिव के रूप में नाग देवता आये और उनकी छाया कर ली।'' परन्तु जब माता ने यह दृश्य देखा तो चिल्लाने लगी और आस–पास की भीड़ इकट्ठी हो गई और सभी ने भगवान शिव की अराधना की। तब अचानक (नाग देवता) वहाँ से चले गये। इस दृश्य से यह प्रतीत होता है कि कुँवर जैतसिंह (असाधारण) नवजात शिशु थे। निकट भविष्य में इनको कोई भी नहीं हरा सकता है।''

जब कुँवर जैतसिंह ने बहसूमा में बड़े होकर। मुगल सल्तनत के खिलाफ जन आन्दोलन किया। और उन्होंने यमुना, गंगा के खादर में रहकर संघर्ष किया। मुगल सल्तनत ने कुँवर जैतसिंह से युद्ध करने के लिए सबसे पहले मुगल सल्तनत सेनापति प्रताप सिंह राजपूत को सेना लेकर भेजा इस युद्ध में राजा जैतसिंह की विजय हुई, प्रताप सिंह राजपूत मारा गया। बाद में मुगल सल्तनत ने दूसरे सेनापति कुँवर अली को जैतसिंह का मुकाबला करने के लिए भेजा परन्तु जैतसिंह वह युद्ध भी जीत गए और कुँवर अली मारे गये। दिल्ली के बादशाह मौ. शाह घबरा गये और सन्धि करने को मजबूर हो गये। अन्ततः राजा जैतसिंह को किला परीक्षितगढ़ का राजा घोषित किया गया। राजा जैतसिंह ने परीक्षितगढ़ के नये किले का निर्माण किया जिसे आज भी किला परीक्षितगढ़ कहते हैं।

मार्च में होली पड़ी थी। पूर्णिमा, होली के दिन राजा जैतसिंह इस संसार से बिदा हो गये।''इसलिये आज तक गुर्जर समाज उनके सम्मान में होली के दिन पक्का पकवान नहीं बनाते। सादे चावल से होली का पूजन करते हैं।''

राजा नैनसिंह नागर

कुँवर नैनसिंह गुलाब सिंह के तीसरे नम्बर के पुत्र थे। इन्होंने पंजाब जाकर सिख धर्म अपना लिया था। इसलिए राजा गुलाब सिंह इन्हीं को राजा बनाना चाहते थे। मुगल सल्तनत से इनको राजा घोषित कराया। राजा नैनसिंह ने सिख धर्म का प्रचार किया। स्वयं सिख धर्म को मानते थे। जैन धर्मः– दिल्ली के सेठ हरसुख राम जैन के कहने पर वर्ष 1801 ई. जैन समाज के लिए पाँच हजार गज जगह हस्तिनापुर में भूमि दान दी थी। और दिगम्बर जैन मन्दिर की नीव भी 1801 में सुंयम राजा नैनसिंह ने अपने हाथों से रखी थी।

राजा नैनसिंह

सुरंगों का निर्माण कराया और सड़कों जाल बिछाया था। राजा ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। वर्ष 1818 ई. राजा नैनसिंह संसार से बिदा हो गये।

राजा नत्थासिंह

राजा नैनसिंह के बड़े पुत्र नत्था सिंह गद्दी पर बैठा। राजा नत्था सिंह ने अपने राजाओं के सम्मान में (माँ कात्यानी देवी) के मन्दिर का निर्माण कराया। इसमें पाली भाषा शिलालेख लगा जिसमें मराठों से युद्ध का वर्णन है और पानीपत का युद्ध वर्णन है। इसी शिलालेख में सर्पनाशक यज्ञ का वर्णन भी है। राजा नत्थासिंह के एक मात्र पुत्री लाड़कौर की शादी फुलेरा दोज के दिन लण्डौरा रियासत के राजकुमार कुँवर खुशहालसिंह से हुई। राजा रामदयाल के पश्चात लण्डौरा के राजा खुशहाल सिंह बने।

रानी लाड़कौर

राजा नत्था सिंह के पश्चात् रानी लाडकौर को किला परीक्षितगढ़ का भी कार्यभार सौंपा गया। रानी लाडकौर ने बहसूमा कुँवर भागमल सिंह व कुँवर दलेल सिंह को जिम्मेदारी सौंपी थी तथा किला परीक्षितगढ़ की जिम्मेदारी जहाँगीर सिंह को सौंपी थी। इनके (पौत्र) कुँवर कदम सिंह जी को जिम्मेदारी दी गई। रानी लाड़कौर के एक मात्र पुत्र राजा रगबीर सिंह थे। राजा नत्थासिंह की जिम्मेदारी किला परीक्षितगढ़ की भी थी।

रानी लाड़कौर भगवान शिव ने दिये दर्शन :–जब रानी लाड़कौर राजा लण्डौरा की जिम्मेदारी थी। ब्रिटिश साम्राज्य फैल चुका था। दिल्ली में उनके गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी थे।

लार्ड डलहौजी ने (लौजीलैकसी एक्ट) जिसको राज्य हड़पन नीति भी कहते हैं। इसी के सम्बन्ध में लार्ड डलहौजी ने भारतवर्ष के सभी राजाओं की बुलाई थी। इसी कानून को लागू करने के लिए। इसी मीटिंग का विरोध सर्वप्रथम रानी लाड़कौर ने किया था। इसी मीटिंग का विरोध सर्वप्रथम रानी लाड़कौर ने किया था। इसी मीटिंग का विरोध करके रानी लाड़कौर दिल्ली से लण्डौरा जा रही थी।

रास्ते में पुरा नामक स्थान पड़ा। अचानक उनका हाथी रूक गया। जब पीलवान ने रानी साहब से बताया कि आपका हाथी आगे नहीं बढ़ रहा है। तो रानी ने सभी को रूकने का आदेश दिया। और रात्रि में उसी स्थान पर रानी रूकी सुबह 4 बजे भगवान शिव ने दिव्य ज्योति प्रदान की और कहा सतयुग के समय मेरा सफेद शिवलिंग यहाँ पर दबा है। इसी जगह में शिवलिंग को निकाल दो। अचानक रानी की नींद खुल गई। रानी लाड़कौर ने उसी स्थान की खुदाई कराई और भगवान शिव का सफेद रंग का शिवलिंग प्राप्त किया। इसी स्थान को पुरा महादेव मंदिर का निर्माण कराया। यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण स्थान है। रानी लाड़कौर 1859 ई. में इस संसार से विदा हो गई। उनके पुत्र राजा रगवीर सिंह की शादी (परिनगर) में रानी लाड़कौर के पश्चात हुई थी। राजा रगबीर सिंह की शादी जयकरण सिंह की बहिन धर्मकौर से सम्पन्न हुई थी।

''मैं प्रताप सिंह नागर, पूर्व रियासत बहसूमा के अपने महान शासकों एवं पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मैं उनका नवजात बालक बार–बार शहीद होने के लिए नतमस्तक हूँ। वर्ष 28 जुलाई – 31 जुलाई 1858 ई० को ब्रिटिश शासन ने बहसूमा राज परिवार को फाँसी दी थी।'' उस वर्ष 28 से 31 जुलाई के बीच (रक्षाबन्धन) का त्यौहार पड़ा होगा। हम बहसूमा के नागर एवं क्षेत्र के गुर्जर और अन्य इस त्योहार को उनके सम्मान की रक्षा करते हुए आज तक इस त्योहार को नहीं मानते हैं और तब तक नहीं मनायेंगे जब तक विदेश (इंग्लैण्ड) से राव कदम सिंह जी की अस्थियाँ नहीं आ जाती हैं और हमारा संघर्ष जारी रहेगा। कोई तो ऐसा राजनेता पैदा होगा जो इस कार्य को सम्पन्न करेगा। तब तक रक्षाबंधन तथा होली का पूजन पक्के (पक्के पकवान से) नहीं करेंगे। कभी कोई भगवान शिव का प्यारा इस कार्य को अवश्य सम्पन्न करेगा। मुझे अपितु पूर्ण विश्वास है।

आपका

कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)
राजा नैनसिंह स्मारिका–बहसूमा (मेरठ)
मो० : 7467856455, 7302190273